मेगाफौना बायस हैम्पर्स कार्नविोर संरक्षण प्रयास

प्रलिमि्स के लयि:

मांसाहारी, प्रोजेक्ट टाइगर, टाइगर रज़िर्व, केन-बेतवा रविर इंटर-लकिगि प्रोजेक्ट, भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधनियिम (1972), भारतीय तेंदुआ, भारतीय जैवकि ववििधिता अधनियिम (2002)।

मेन्स के लयि:

भारत में वन्यजीव संरक्षण में चुनौतयिाँ, भारत में माँसाहारयिों का संरक्षण और प्रबंधन, भारत में जैव ववििधिता संरक्षण, संरक्षण प्रयासों में पारस्थितिकि डेटा की भूमकिा, मानव- पशु संघर्ष।

चर्चा में क्यों?

भारत का **मांसाहारी अनुसंधान बड़ी और अधकि लोकप्रयि प्रजातयिों** पर बहुत अधकि ध्यान केंद्रति कर रहा है, जसिसे छोटे और कम प्रसद्धि माँसाहारयिों की जानकारी में कमी आ रही है। जानकारी का यह अंतर देश में संरक्षण के प्रयासों में बाधा बन रहा है।

संरक्षण के लयि मांसाहारी जीव क्यों महत्वपूर्ण हैं?

- **पारस्थितिकि संतुलन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमकिा नभिाते हुए मांसाहारी खाद्य शृंखला पर हावी हैं।** उनके महत्त्व के बावजूद, **मांसाहारी वशि्व में सबसे अधकि संकट वाले स्तनधारयिों में से हैं।**
- इसलयि वशि्व स्तर पर मांसाहारी आबादी के अध्ययन, सुरक्षा और प्रबंधन में पर्याप्त अनुसंधान और संरक्षण संसाधनों का नविश कयिा जाता है।

भारत में मांसाहारी जीवों की संरक्षण स्थति

- **भारत दुनयिा की 23% मांसाहारी आबादी का आवास है, जो 60 प्रजातयिों से संबंधति हैं।**
- हालाँकि वर्ष 1947 से प्रकाशति अध्ययनों की समीक्षा से पता चलता है कि देश में उनकी संरक्षण स्थति और नीतयिों पर करशि्माई/चमत्कारी प्रजातयिों पर 70 वर्षों के शोध का प्रभाव संतोषजनक नहीं रहा है।
- **जंगली बलि्ली वर्ग, वशिष रूप से बाघ, देश में मांसाहारी समूह पर हावी है।** अन्य शीर्ष मांसाहारी, जनि पर पर्याप्त शोध ध्यान केंद्रति कयिा गया है उनमें भारतीय तेंदुआ, सुनहरा सयिार, ढोल और जंगली बलि्ली शामलि हैं।
    - हालाँकि **छोटे और कम करशि्माई/चमत्कारी मांसाहारयिों पर अध्ययन की गुणवत्ता आमतौर पर खराब रही है।**

भारत में मांसाहारी जीवों पर अनुसंधान का प्रभाव:

- बाघों पर वैज्ञानकि अनुसंधान के कारण **वर्ष 1973 में** प्रोजेक्ट टाइगर **की शुरुआत हुई। जसिसे देश भर में 50 स्थानों पर बाघ अभयारण्यों की स्थापना में मदद मलिी।**
- अनुसंधान होने से **बाघों के आवास क्षेत्र में राजमार्गों के नरि्माण या वस्तिार के संबंध में साक्ष्य प्रदान हुए हैं, जैसे कि** बांदीपुर टाइगर रज़िर्व, कान्हा-पेंच बाघ गलयिारा **और** भगवान महावीर वन्यजीव अभयारण्य **में हुए वकिास।**
    - अनुसंधान डेटा के आधार पर महत्वाकांक्षी केन-बेतवा नदी जोड़ो परयिोजना का वरिोध कयिा गया है जसिसे मध्य प्रदेश में पन्ना टाइगर रज़िर्व के मुख्य क्षेत्र के एक बड़े हस्सि के जलमग्न होने की संभावना है।
- **भारतीय तेंदुए पर अनुसंधान के परणिामस्वरूप मानव-तेंदुआ संघर्ष को रोकने हेतु राष्ट्रीय दशिा-नरि्देश तैयार कयि गए हैं।**
- देश में बाघ को मांसाहारी जीव के रूप में प्रमुख माना जाता है। भारतीय तेंदुआ, ढोल और जंगली बलि्ली अन्य प्रमुख ऐसे मांसाहारी जीव हैं, जनि पर पर्याप्त शोध कयिा गया है।
- लेकनि छोटे स्तर के माँसाहारयिों पर सीमति अध्ययन हुआ है।

छोटे स्तर के मांसाहारी जीवों पर शोध क्यों महत्त्वपूर्ण है?

- इससे **माँसाहारियों और उनके पारस्थितिकी के अन्य समुदायों और पारस्थितिकी तंत्र के बीच महत्त्वपूर्ण संबंध** को समझने में मदद मिलेगी।
- जंगली बिल्ली को मांसाहारी कृंतक आबादी को नियंत्रित करने, बीजों को प्रसारित करने और वन पारस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने जैसे महत्वपूर्ण पारस्थितिकी कार्यों हेतु जाना जाता है।
    - **सिवेट को भी बीजों को प्रसारित करने और वन पारस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिये जाना जाता है।**

नोट:

- **करिस्मैटिक मेगाफौना (Charismatic Megafauna)** शब्द का उपयोग जीवों की प्रमुख प्रजातियों का वर्णन करने के लिये किया जाता है, जैसे कि हाथी, बाघ, शेर और पांडा। इन जानवरों का प्रायः इनके सांस्कृतिक और सौंदर्य संबंधी महत्त्व के कारण इनके संरक्षण पर अधिक महत्त्व दिया जाता है।

भारत में मांसाहारी अनुसंधान एवं संरक्षण में चुनौतियाँ:

- **आर्द्रभूमि संरक्षण को कम प्राथमिकता दी जाती है** एवं चरागाह पारस्थितिकी तंत्र, जो स्याहगोश/कैरॅकेल जैसी गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजातियों को शरण देते हैं, को भी अनुसंधान एवं संरक्षण में दरकिनार कर दिया जाता है।
- प्राकृतिक इतिहास के अध्ययन में गिरावट तथा इस तरह के अध्ययनों को प्रकाशित करने वाली पत्रिकाओं में समानांतर कमी से प्रजातियों की पारस्थितिकी को समझने हेतु बुनियादी कदम है।
- नीतियाँ अक्सर राजनीतिक प्रभावों और **गलत प्राथमिकताओं से संचालित होती हैं तथा वैज्ञानिक सिफारिशों की अवहेलना की जाती है।**
- मांसाहारी सीमित अंतःविषय अध्ययन एवं सामाजिक-पारस्थितिक रूप से संवेदनशील नीतियों के विकास में बाधा डालते हैं।
- गैर-सरकारी एजेंसियों और स्वतंत्र शोधकर्त्ताओं को लाभ पहुँचाने हेतु नौकरशाही की बाधाओं को दूर करने की आवश्यकता है।

भारत में मांसाहारी संरक्षण में सुधार हेतु क्या कदम उठाए जा सकते हैं?

- **छोटे और कम प्रभावकारी माँसाहारियों पर शोध के लिये धन में वृद्धि**, ताकि उनकी संख्या को बढ़ाया जा सके और भारत की संरक्षण नीतियों में उनके कमज़ोर और खतरे वाले आवासों पर ध्यान केंद्रित किया जा सके।
- सामाजिक-पारस्थितिक रूप से संवेदनशील समुदायों को शामिल करके नीतियों को प्रोत्साहित करने हेतु एक सहयोगी और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ अंतःविषय अनुसंधान।
- भारतीय जैवविविधता अधिनियम (2002) के तहत जैव विविधता विरासत स्थलों या भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत सामुदायिक कोष जैसे ढाँचे व स्थानीय नेतृत्त्व को बढ़ावा तथा अंततः मांसाहारी अनुसंधान का लोकतंत्रीकरण करके सामाजिक-पारस्थितिक प्रणालियों के रखरखाव की सुविधा प्रदान करना।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/megafauna-bias-hampers-carnivore-conservation-efforts